आरती श्रीसालासर बालाजी (हनुमान) की

जयति जय जय बजरंग बाला, कृपा कर सालासर वाला ।।
चैत सुदी पूनम को जन्मे, अन्जनी पवन खुशी मन में ।
प्रकट भये सुर वानर तन में, विदित यश विक्रम त्रिभुवन में ।
दूध पीवत स्तन मात के, नजर गई नभ ओर ।
तब जननी की गोद से पहुंच, उदयाचल पर भोर ।
अरुण फल लखि रवि मुख डाला । कृपा कर ।।टेक।।
तिमिर भूमण्डल में छाई, चिबुक पर इन्द्र बज्र बाए ।
तभी से हनुमत कहलाए, द्वय हनुमान नाम पाये ।
उस अवसर में रुक गयो, पवन सर्व उन्चास ।
इधर हो गयो अन्धकार, उत रुक्यो विश्व को श्वास ।
भये ब्रह्मादिक बेहाला । कृपा कर ।।टेक।।
देव सब आये तुम्हारे आगे, सकल मिल विनय करन लागे ।
पवन कू भी लाए सागे, क्रोध सब पवन तना भागे ।
सभी देवता वर दियो, अरज करी कर जोड़ ।
सुनके सबकी अरज गरज, लखि दिया रवि को छोड़ ।
होगया जग मे उजियाला । कृपा कर ।।टेक।।
रहे सुग्रीव पास जाई, आ गये वन में रघुराई।
हरी रावण सीतामाई, विकल फिरते दोनों भाई ।
विप्र रूप धरि राम को, कहा आप सब हाल ।
कपि पति से करवाई मित्रता, मार दिया कपि बाल ।
दुःख सुग्रीव तना टाला । कृपा कर ।।टेक।।
आज्ञा ले रघुपति की धाया, लंक में सिन्धु लाघं आया ।
हाल सीता का लख पाया, मुद्रिका दे बनफल खाया ।
वन विध्वंस दशकंध सुत, वध कर लंक जलाय ।
चूड़ामणि सन्देश सिया का, दिया राम को आय ।
हुए खुश त्रिभुवन भूपाला । कृपा कर ।।टेक।।
जोड़ी कपि दल रघुवर चाला, कटक हित सिन्धु बांध डाला ।
युद्ध रच दीन्हा विकराला, कियो राक्षस कुल पैमाला ।
लक्ष्मण को शक्ति लगी, लायौ गिरि उठाय ।

देई संजीवन सखन जियाये, रघुबर हर्ष सवाय ।
गरब सब रावन का गाला । कृपा कर ।।टेक।।
रची अहिरावन ने माया, सोवते राम लखन लाया ।
बने वहाँ देवी की काया, करने को अपना चित चाया ।
अहिरावन रावन हत्यौ, फेर हाथ को हाथ ।
मन्त्र विभीषण पाय आप को, हो गयो लोका नाथ ।
खुल गया करमा का ताला । कृपा कर ।।टेक।।
अयोध्या राम राज्य कीना, आपको दास बना दीना ।
अतुल बल धृत सिन्दूर दीना, लसत तन रूप रंग भीना ।
चिरंजीव प्रभु ने कियो, जग में दियो पुजाय ।
जो कोई निश्चय कर के ध्यावे, ताकी करो सहाय ।
कष्ट सब भक्तन का टाला ।कृपा कर ।।टेक।।
भक्तजन चरण कमल सेवे, जात आत सालासर देवे ।
ध्वजा नारियल भोग देवे, मनोरथ सिद्धि कर लेवे ।
कारज सारों भक्त के, सदा करो कल्याण ।
विप्र निवासी लक्ष्मणगढ़ के, बालकृष्ण धर ध्यान ।
नाम की जपे सदा माला ।कृपा कर ।।टेक।।

विवरण

चैत्र सुदी में पूर्णिमा के दिन जन्म लेने वाले बजरंग बाला हनुमान जी की जय हो । आपके जन्म लेने से माता अंजनि एवं पवन देवता बड़े ही खुश हैं । तीनों भुवनों में अपना पराक्रम दिखाने वाले एवं अपने यश को फैलाने वाले हनुमान जी प्रगट हुए, जिनका शरीर तो मनुष्य का था, परन्तु मुख वानर का था ।

अपनी माता के स्तन से दूध पीते समय इनकी नजर आकाश की ओर चली गई, तब इन्होनें अपनी माता की गोद से उड़कर उदयाचल पर्वत पर चले गये एवं सूर्य को लाल फल समझकर मुख में डाल लिया, पूरे ब्रह्माण्ड में अन्धकार छा गया, तब इनके ठुड्ढी पर इन्द्र ने वज्र से वार किया, तभी से ये हनुमान कहलाने लगे, इनका द्वय हनुमान नाम पड़

गया ।

उस समय पवन देवता भी रुक से गये, उन्हें अपना मार्ग नहीं मिल रहा था । इधर पूरा संसार अन्धकारमय हो गया, उधर पूरे विश्व का जैसे सांस रुक सा गया,ब्रह्मा आदि सभी देवता बेचैन हो उठे । सभी देवता आपके पास आकर
आपसे विनती करने लगे, सभी देवता अपने साथ में आपके पिता पवन देवता को भी साथ लाये थे, सबके क्रोध से पवन देवता वहाँ से भाग खड़े हुए ।

सभी देवता आपको एक से एक वर देने लगे एवं हाथ जोड़कर आपसे प्रार्थना करने लगे । सबकी प्रार्थना को सुनकर आपने सूर्य को अपने मुख से मुक्त कर दिया,जिससे पूरे संसार में फिर से उजाला फैल गया । आपने सुग्रीव के पास जाकर कहा कि वन में श्री राम जी आयें हैं, रावण ने सीता माँ का हरण कर लिया है तथा दोनों भाई राम एवं लक्ष्मण बेचैनी से घूमते रहते हैं ।

ब्राह्मण का रूप धर कर आपने सारा हाल राम से कहा तथा उनसे सुग्रीव की मित्रता करा कर बाली को मरवा डाला, जिससे सुग्रीव के सारे दुःख टलगये ।

श्री राम जी की आज्ञा लेकर आप सिंधु नदी लांघकर लंका में गये एवं सीता का हाल जाना तथा राम जी की दी हुई मुद्रिका उन्हें देकर वन के फलों को खाने लगे । आपने सारे वन के वृक्षों को तितर-बितर कर डाला तथा रावण के पुत्र को मारकर लंका जला डाली तथा फिर राम के पास आकर सीता जी का संदेश चूड़ामणि को दिया, जिससे श्री राम जी बड़े खुश हुए ।

सभी वानरों का दल एवं श्री राम जी चल दिये सिन्धु नदी में बाँध डालने तथा एक भयंकर युद्ध की रचना कर डाली, जिससे सभी राक्षस पैमाल हो गये । लक्ष्मण को जब शक्ति बाण लगी तब आप पूरा गिरि पर्वत ही उठा लाये तथा उन्हें संजीवनी बूटी देकर लखन को जिलाया, जिससे श्री राम जी उन पर बहुत खुश हुए । रावण की पूरी सेना को

आपने रूई के समान धुन डाला ।

अहिरावण ने एक माया रची वह सोते हुए श्री राम जी एवं लक्ष्मण जी को उठाकर पाताल ले गया तब वहाँ हनुमान जी ने देवी का रूप धारण करके अहिरावण का वध करके दोनों भाईयों को वापस लाये । आप ही के कारण विभीषण लंका नगरी के राजा बन गये एवं उनके कर्म का ताला खुल गया अर्थात् चाहकर भी जो भलाई का काम रावण के डर से वे नहीं कर पाते थे, वे करने लगे ।

फिर अयोध्या में आकर राम ने राज्य किया एवं आपको अपना दास बना डाला । आप, अपरिमित बल रखने वाले श्री हनुमान जी, को श्री राम जी ने घी एवं सिन्दूर दिया, जिससे आपने अपने पूरे शरीर को रंग लिया, आपके इसी रक्त के समान लाल शरीर को सारा जग पूजता है । जो भी आपका श्रद्धा से ध्यान करता है, उसके आप सहायक बन उसके सभी कष्टों का निवारण करते हैं ।

भक्तजन आपके चरण कमलों की सेवा करते हैं, आते-जाते आपको शीश नवाते हैं, नारियल एवं ध्वजा का भोग लगाते हैं तथा अपनी मनोकामना को पूर्ण करते हैं । अपने भक्तों के ये हनुमान जी सभी कार्यों का कल्याण करते हैं । लक्ष्मणगढ़ के निवासी ब्राह्मण बालकृष्ण हनुमान जी को अपने ध्यान में रखते हैं तथा उनके नाम की माला सदा जपते रहते हैं ।